दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 11.09.2021

प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 11 सितम्बर 2021 गोरखपुर। युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला के द्वितीय दिवस पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन, महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के तत्वावधान में हुआ। जिसमें **मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. कविता सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, के.एस.साकेत पी.जी.कालेज, अयोध्या** ने कहा कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के समस्त धार्मिक स्वरूपों के अवलोकन से पता चलता है कि 11वीं शताब्दी में नाथ पंथ भी शैव सम्प्रदाय के रूप में अस्तित्व में आया, जिनके आराध्य देवता भगवान शिव है और मत्स्येन्द्रनाथ जी को इस सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना गया। इन्हें बौद्ध धर्म में बज्रयान के बुद्ध अवलोकितेश्वर की संज्ञा प्रदान की गयी। जिससे पता चलता है कि नाथ पंथ में शैव और बौद्ध धर्म के तत्व समान रूप से विद्यमान थे। मत्स्येन्द्रनाथ ब्रह्मचर्य के प्रबल समर्थक थे और इन्होंने योग को आत्मबल और आत्ममंथन का प्रमुख अस्त्र बताया। इनके पश्चात् गोरखनाथ जी इस पथ के इष्ट देव बने जिन्हें शिव का अवतार माना गया, इनका सूत्र है परमतत्व और परम शिव की प्राप्ति क्योंकि जब इनकी इच्छा होती है तो यह सृष्टि की तो ये शिव बन जाते है। भक्ति आन्दोलन के पूर्व नाथपंथ सर्वाधिक शक्तिशाली पंथ था तथा अलख निरंजन, प्रणव, परम तत्व को ही अपने अभिवादन के रूप में स्वीकार करते थे। 14वीं 15वीं शताब्दी यह पंथ जनमानस में इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि छोटे–छोटे गांवों में भी इसके विशाल मन्दिर देखने को मिलते थे। इसके भजन कीर्तन जनमानस में व्याप्त हो गये। भारत के सूदुर क्षेत्रों से लेकर विदेशी भूमि तक भी यह पंथ सर्वमान्य सर्वविदित है। सामाजिक समरसता सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता तथा शैक्षिक पुनर्जागरण इस पंथ के आदर्श हैं।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने कहा कि नाथों की जीवन शैली परिब्राजक की होती है तप और जप में इनकी अटूट आस्था रहती है। चुंकि नाथ पंथ का प्रभाव जनमानस पर इतना अधिक पड़ा की भारतीय लोक संस्कृति में समाहित हो गया। नाथ सिद्धों के शुद्ध अन्तः करण एवं सात्विक जीवन की स्मृति किसी को भी अनुप्राणित कर उसके जीवन में परम सत्व की प्राप्ति करा सकता है।

कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन एवं अतिथि का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ.धीरेन्द्र सिंह ने किया। इसका कुशल संचालन विभाग की विदूषी शिक्षिका डॉ. सीमा श्रीवास्तव ने किया। आभार ज्ञापन डॉ.कामिनी सिंह ने किया, इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. विवेक शाही, श्री सुरेन्द्र चौहान तथा डॉ. मुरली मनोहर तिवारी अन्य शिक्षकगण तथा छात्र–छात्राएं सम्मिलित हुए।

डॉ.(वीणा गोपाल मिश्रा)
प्राचार्य